शब्द

आप जानते हैं वि निश्चित अर्थ की प्रतीति करानेवाले वर्ण समूह को शब्द कहते हैं। शब्द दो प्रकार के हैं–मूल और व्युत्पन्न। मूल शब्द को रूढ़ शब्द भी कहा जाता है जैसे–घर, किताब, बस, जल, आदि। मूल शब्द में उपसर्ग या प्रत्यय जुड़ने से बने शब्दों को व्युत्पन्न शब्द कहा जाता हैं। व्युत्पन्न शब्दों को यौगिक तथा योगरूढ़ दो भागों में बाँटा जाता है। योगरूढ़ शब्दों का अर्थ उनकी रचना के बजाय किसी अन्य अर्थ में रूढ़ हो जाता है; जैसे – पंकज, नीरज, जलज। यहाँ 'पंकज' का अर्थ पंक (कीचड़) में उत्पन्न होने वाला 'कमल' के लिए रूढ हो गया है। पंक में उत्पन्न होने वाले अन्य सूक्ष्म जीवों, जंतुओं से इसका कोई संबंध नहीं है।

हिन्दी के शब्द भंडार में अधिकांश मूल शब्द संस्कृत परंपरा से आते हैं। संस्कृत से हिन्दी में आए शब्द दो प्रकार के हैं– (1) तत्सम शब्द और (2) तद्भव शब्द।

तत्सम शब्द – तत्सम (तत्+सम) का अर्थ हैं – उसके (संस्कृत के, जैसा अर्थात् जिन हिन्दी शब्दों को संस्कृत में से उसी अर्थ और स्वरूप में स्वीकार कर लिया गया हैं, वे **तत्सम** शब्द हैं। जैसे – भूमि, पुष्प, ममता, साहस आदि।

तद्भव शब्द –तद्भव का अर्थ हैं 'उससे उत्पन्न' करे वास्तव में संस्कृत के वे शब्द तो विकासक्रम में पालि, प्राकृत और अबभ्रंश से विकसित होकर अपने परिवर्तित रूप में हिन्दी में प्रचलित हैं, **तद्भव** कहलाते हैं। जैसे – माता (मातृ), दूध (दुग्ध) काम (कर्म), पत्ता (पत्र) इत्यादि।

देशज : हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द प्रचलित हैं जिनके मूल का स्पष्ट पता नहीं चलता है। ये प्राय: जन भाषाओं से आए हुए हैं। इनके मूल का वैज्ञानिक अनुमान लगाना प्राय: संभव नहीं हैं, इन्हें 'देशज' देश (यानी स्थान विशेष)से उत्पन्न कहा जाता है। जैसे – पगड़ी, खाट, झाड़, झंझट, भोंपू इत्यादि।

हिन्दी शब्दों का एक बड़ा वर्ग '**आगत**' यानी विदेशी शब्दों का हैं। अपनी विकास यात्रा में हिन्दी ने अरबी फारसी, तुर्की तथा यूरोपीय भाषाओं – अंग्रेजी, पुर्तगाली, जर्मनी आदि के शब्दों को किंचित, परिवर्तन के साथ आत्मसात् किया हैं। इन शब्दों को '**आगत' या 'विदेशी'** शब्द कहते हैं। जैसे–

अरबी – अदालत, अल्लाह, आईना, इम्तहान, औरत, कसम, कसाई, किताब, कुरसी, फसल, दवा फकीर, मरीज़, हवा, शतरंज, शैतान, हुक्म आदि।

फारसी – आदमी, आसमान, कमरा कारीगर, गुब्बारा, ज़मीन, गुलाब, चिलम, जंजीर, जहर, जानवर, तराजू, दरवाज़ा, दिमाग, दूरबीन, व्याज, फौज, बदमाश, बीमा, मसाला, मेज़, महेमान, शादी, शायरी, सब्जी, सरकार इत्यादि।

तुर्की – कुली, कैंची, कुरता, चाकू, तोप, बंदूक, बारूद, बेगम इत्यादि।

अंग्रेजी – इंजन, एकड़, कंपनी, कार, कॉलेज, कालोनी, कोट, क्रिकेट, क्लब, गैस, गाउन, चॉकलेट, जेल, टाई, पाइप, फलैट, फुटबोल, पलेटफार्म फ्रॉक, बजट, बूट, मीटर, लाटरी, सूटकेस, स्कूटर स्टेशन, हीटर इत्यादि

पुर्तगाली – आया, आलपिन, गमला, चाबी, तौलिया, नीलाम, बालटी, मिस्तरी, संतरा, साबुन इत्यादि।

अन्य भाषाओं से – मिग, स्पुतनिक, ल्यूना (रूसी) चाय (चीनी) इत्यादि।

(5) **संकर शब्द** – दो भिन्न स्रोतों से आए शब्दों के मेल से बने शब्द संकर कहलाते हैं। जैसे –

रेलगाड़ी – रेल (अंग्रेजी)+गाड़ी (हिन्दी)

छायादार–छाया (संस्कृत)+ दार (फारसी)

सीलबंद – सील (अंग्रेजी)+ बंद (फारसी) आदि।

इस प्रकार हिन्दी शब्द भंडार को इतिहास या स्रोत की दृष्टि से पाँच भागों – (1) तत्सम, (2) तद्भव (3) देशज (4) आगत या विदेशी तथा संकर शब्दों में बाँटा जा सकता है।

शब्दों का वर्गीकरण

1 रचना के आधार पर वर्गीकरण :

रचना या बनावट की दृष्टि से शब्दों को दो वर्गो में बाँटा जाता है:

(1) रूढ़ (मूल) शब्द और (2) व्युत्पन्न शब्द

(1) रूढ़ (मूल) शब्द :

जो शब्द अपने आप में पूर्ण हो तथा उनमें किसी

– शब्द या शब्दांश का योग न हुआ हो उनको रूढ़ या मूल शब्द कहते हैं।

– जो शब्द खण्डों मे विभक्त नहीं किये जा सकते, उनको रूढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे – तराजू, मुख, हाथ, काम, पैर आदि, ये शब्द दूसरों के योग से नहीं बने हैं

यदि इन शब्दों को विभक्त किया जाए तो भी कोई अर्थ नहीं निकलता, जैसे–

त+रा+जू, मु+ख, हा+थ, का+म, पै+र

(2) व्युत्पन्न शब्द

जो शब्द किसी शब्द या शब्दांश उपसर्ग या प्रत्यय के जुड़ने से बनते हैं उनको व्युत्पन्न शब्द कहते हैं; जैसे – निष्पक्ष, देखकर, प्रमाणपत्र, कमबख्त आदि। व्युत्पन्न शब्द दो प्रकार के हैं :

(क) यौगिक और (ख) योगरूढ़

(क) यौगिक शब्द : यौगिक अर्थात् :

जो शब्द किसी मूल शब्द में किसी अन्य शब्द या शब्दांश (उपसर्ग या प्रत्यय) के योग से बनते हैं, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं।

* शब्द+शब्द :

न्यायालय = न्याय + आलय = (शब्द+शब्द)

विद्यालय = विद्या + आलय = (शब्द+शब्द)

* शब्द+शब्दांश :

देखकर = देखना + कर = (शब्द+शब्दांश)

पकड़कर = पकड़ना + कर = (शब्द+शब्दांश)

* शब्दांश+शब्द :

निर्बलता = निः + बलता = (शब्दांश+शब्द)

लावारिस = ला + वारिस = (शब्दांश+शब्द)

(ख) योगरूढ़ शब्द जो शब्द यौगिक होते हुए भी किसी एक ही अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं; उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे – पंकज (पंक+ज = पंक में उत्पन्न होने वाला) इस सामान्य अर्थ में प्रचलित न होकर 'कमल' के अर्थमें रुढ़ हो गया हैं। अतः पंकज योगरूढ़ शब्द हैं।

इसी प्रकार जलज, सरसिज, मनोज, दशानन, चतुरानन, श्वेतांबर, लंबोदर आदि भी योगरूढ़ शब्द हैं।

2. अर्थ की दृष्टि से वर्गीकरण :

शब्द और अर्थ का अटूट संबंध होता है; किन्तु शब्दों के अर्थ सदा समान नहीं रहते हैं। अर्थ की दृष्टि से शब्द के निम्नानुसार चार प्रमुख भेद हैं –

(क) समानार्थी शब्द या पर्यायवाची शब्द

(ख) एकार्थी शब्द

(ग) अनेकार्थी शब्द

(घ) विपरीतार्थी शब्द या विलोम शब्द

(क) समानार्थी शब्द या पर्यायवाची शब्द :

कुछ शब्द अलग होते हुए भी उसका अर्थ एक जैसा होता है, ऐसे शब्दों को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

जैसे –

आँख – नेत्र, नयन, लोचन, दृग

आकाश – गगन, अम्बर, आसमान

नदी – सरिता, आपगा, तरंगिणी

पृथ्वी – भूमि, धरती, धरा, वसुंधरा

कमल – सरोज, पद्मज, पद्म, सरसिज

(ख) एकार्थी शब्द :

ऐसे शब्द जिनका एक ही अर्थ होता हैं;

जैसे – कुंदन, चुनरी, रुमाल, कलगी

(ग) अनेकार्थी शब्द :

ऐसे शब्द जिनके कई अर्थ होते हैं;

जैसे –

आब – शोभा, कान्ति, चमक, पानी, पसीना, आँसू,

कर – हाथ, किरण, लगान, हाथी की सूँढ।

अवकाश – समय, आकाश, रिक्त स्थान, विश्रामकाल, छुट्टी का समय।

कोट – किला, प्राचीन, महल, समूह, एक अंग्रेजी ढंग का वस्त्र।

गुरु – शिक्षक, श्रेष्ठ, भारी, एक ग्रह

(घ) विपरीतार्थी शब्द या विलोम शब्द :

ऐसे शब्द युग्म जो – एक – दूसरे का विरोधी अर्थ सूचित करते हैं।

जैसे –

आदि – अंत शत्रु – मित्र नकद – उधार

आशा – निराशा निन्दा – स्तुति उदय – अस्त

आयात – निर्यात अंधकार – प्रकाश हिंसा – अहिंसा

विशेष : कुछ शब्द के उच्चारण में यदि सावधानी न बरती जाए तो उनका उच्चारण अर्थभेदक हो जाता हैं, खासकर (उनकी दीर्घता या ह्रस्वता के कारण एसा होता है। जैंसे – सुर–सूर; दीन–दिन; कुल–कूल आदि।

शब्द–निर्माण

हम जान चुके हैं कि मूल शब्दों में कुछ शब्दों या शब्दांशों को जोड़ कर नए शब्दों का निर्माण किया जाता है। यह शब्द निर्माण तीन प्रकार से होता है –

(1) उपसर्ग द्वारा

(2) प्रत्यय द्वारा

(3) समास द्वारा

उपसर्ग

ने लघुत्तम शब्दांश हैं जो शब्द के आरंभ में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं; जैसे – सु+विचार = सुविचार, आ+जीवन = आजीवन

हिन्दी में तीन प्रकार के उपसर्ग हैं –

1. तत्सम उपसर्ग

2. तद्भव उपसर्ग

3. आगत (विदेशी) उपसर्ग

1. तत्सम उपसर्ग – ये उपसर्ग संस्कृत से आए हैं। ये केवल तत्सम शब्दों में ही लगते हैं। कुछ प्रचलित तत्सम उपसर्ग नीचे सोदाहरण नीचे दिए गए हैं –

उपसर्ग	शब्द	उदाहरण
अति	अधिक	अतिरिक्त, अत्याचार, अतिशय, अत्यंत
अधि	श्रेष्ठ, ऊपर	अधिकार, अध्यादेश, अधिकृत, अधीश अधिशुल्क
अनु	पीछे, गौण बाद में आनेवाला	अनुचर, अनुराग, अनुकूल, अनुशासन,अनुकम्पा, अनुमान
अप	बुरा, हीन	अपयश, अपवाद, अपहरण, अपव्यय, अपमान
अभि	सामने, ओर	अभिनव, अभिभावक, अभिवादन, अभ्यागत, अभियान, अभीष्ट, अभिमान
अव	बुरा, हीन	अवतार, अवनति, अवगुण, अवमूल्यन
वि	विशिष्ट, भिन्न	विशुद्ध, विरक्त विनम्र
आ	तक, समेत	आरक्षण, आमरण, आदान, आकंठ
नि	नीचे, निषेध,	निवास, निवारण, निबंध, निरूपण, निगमन
परा	विपरीत, नाश	पराजय, प्राक्रम, पराधीन, पराकाष्ठा
प्र	आगे, अधिक	प्रकार, प्रगति, प्रेरणा, प्रमाण, प्रसिद्ध, प्रगति
प्रति	विरुद्ध, सामने	प्रतिकार, प्रतिकूल, प्रतिरोध, प्रतिवादी
दुर	बुरा	दुर्भाग्य, दुर्घटना, दुर्बल

2. **तद्भव उपसर्ग :** हिन्दी में अधिकांश तद्भव उपसर्ग हैं, जो संस्कृत के तत्सस उपसर्गों से ही विकसित हुए हैं; जैसे –

उपसर्ग	शब्द	उदाहरण
अ/अन	अभाव, निषेध	अछूत, अनजान, अनमोल, अनकहा, अनबोला, असफलता, अनदेखा, अढंर
क/कु	बुरा	कपूत, कुचाल, कुरूप, कुलक्षण
नि	रहित	निडर, निहत्था, निकम्मा
स/सु	अच्छा	सुजान, सुडौल, सपूत, सुफल, सचेत

अध	आधा	अधकचरा, अधपका, अधजला, अधमरा
बिन	बिना	बिनब्याही, बिनमाँगे, बिनजाने, बिनखाये
भर	पूरा	भरपेट, भरसक, भरमार
चौ	चार	चौपाई, चौमासा, चौराहा, चौकन्ना

3. **आगत (विदेशी) उपसर्ग :** जो उपसर्ग विदेशी भाषाओं सें हिन्दी में आए हैं, वे विदेशी उपसर्ग कहलाते हैं। इनमें अधिकतर फारसी–उर्दू के हैं। जैसे –

उपसर्ग	शब्द	उदाहरण
ब	के साथ, के बिना	बगैर, बखूबी, बदौलत
बा	साथ	बाकायदा, बाक्षदत, बनाम
बि	बिना	बेघर, बेहोश, बेसमझ, बेगुनाह, बेखटके, बेदाग, बेवजह
बद	बुरा	बदनाम, बदमाश, बदचलन, बदसूरत, बद्किस्मत
खुश	अच्छा	खुश किस्मत, खुशहाल, खुसमिज़ाज
ना	अभाव	नामालूम , नाराज, नासमझ, नाबालिग, नामुराद
गैर	भिन्न	गैर हाजिर, गैर सरकारी, गैर जिम्मेदारी
ला	नहीं, अभाव	लाजवाब, लाइलाज, लापरवाह, लावारिस
हम	आपस में साथ	हमउम्र, हमजोली, हमवतन, हमसफर, हमशक्ल
कम	थोड़ा	कमबख्त, कमजोर, कमउम्र, कमनसीब, कमनीय

प्रत्यय : शब्दों के अंत में लगकर जो शब्दांश उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे – जलज पंकज आदि, (जल = पानी, ज जन्म लेनेवाला अर्थात् पानी में जन्म लेनेवाला = कमल)। प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं।

1. **कृत प्रत्यय :** जो प्रत्यय धातुओं अथवा क्रियाओ के अंत में लगते हैं, वे कृत प्रत्य कहलाते हैं। इनके योग से बने शब्दों को कृदंत कहते हैं। राखन+हारा = राखनहारा; लिख+आवट = लिखावट/हिन्दी के कुछ कृत् प्रत्ययों के उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

प्रत्यय	शब्दरूप
अक	पाठक, धावक
आक	तैराक, चालाक
आड़ी	अनाड़ी, खिलाड़ी, अगाड़ी

ऊ	कमाऊ, चलाऊ
आऊ	बिकाऊ, टिकाऊ, चलाऊ
आका	धड़ाका, धमाका
आलू	झगड़ालू
एरा	लुटेरा, सँपेरा
आ	झटका, झूला
आव	बहाव, चढ़ाव
आप	मिलाप, विलाप, आलाप
आई	बुनाई, लिखाई, कमाई
आहट	चिकनाहट, घबराहट
वाला	पढ़नेवाला, रखवाला

2. **तद्धित प्रत्यय :** जो प्रत्यय संज्ञा, विशेषण, अंत में लगकर उनसे नए शब्द बनाते हैं. वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं, जैसे –

प्रत्यय	**शब्दरूप**
आर	सुनार, लुहार, कहार
कार	चित्रकार, कलाकार
ई	धोबी, तेली
वाला	घरवाला, टोपीवाला
आ	बुलावा, सराफा
इन	मालिन, धोबिन
पा	मोटापा, बुढ़ापा
औती	बपौती, मनौती
पन	पीलापन, बचपन
आल	ससुराल, ननिहाल
इया	लूटिया, डिबिया, खटिया
हारा	लकड़हारा, पनिहारा
गर	कारीगर, बाजीगर
इमा	कालिमा, लालिमा आदि

समास : दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। समास रचना में दो शब्द (पद) होते हैं। पहला पद पूर्वपद तथा दूसरा पद उत्तर पद कहलाता है। समास शब्दों को अलग–अलग करने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहा जाता है। उदाहरण के लिए

'गंगा का जल' पद में दो पद हैं – (1) गंगा (2) जला समास होने पर बनेगा 'गंगाजल'। गंगा जल का विग्रह करने पर हम ऐसा लिखेंगे–

'गंगा का जल'।

हिन्दी में समास के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं :

(1) तत्पुरुष समास

(2) कर्मधारय समास

(3) द्विगु समास

(4) बहुव्रीहि समास

(5) द्वन्द्व समास

(6) अव्ययीभाव समास

1. **तत्पुरुष समास :** तत्पुरुष समास में उत्तरपद प्रधान होता है तथा पूर्वपद गौण होता है । इस समास में कारक विभक्ति या एकाधिक शब्दों का लोप होता है। जैसे –

समस्त पद	**विग्रह**
जनप्रिय	जन को प्रिय
यश प्राप्ति	यश को प्राप्त
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत
गुणयुक्त	गुण से युक्त
प्रतीक्षालय	प्रतीक्षा के लिए आलय
मताधिकार	मत का अधिकार
पाठशाला	पाठ के लिए शाला
चरण स्पर्श	चरण का स्पर्श

2. **कर्मधारय समास :** कर्मधारय समास में पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है; जैसे –

नीलकमल	नीले रंग का कमल
नीलांबर	नीले रंग का अंबर
श्वेताबंर	सफेद रंग का अंबर
महाजन	महान है जो जन
दुश्चरित्र	बुरा है जो चरित्र
महापुरुष	महान है जो पुरुष

3. **द्विगु समास :** जहाँ समस्त पद के पूर्वपद संख्यावाचक हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे –

पंचवटी	पाँच वटों का समाहार
चौराहा	चार राहों का समाहार
पंजाब	पाँच आबों (नदी) का समाहार
शताब्दी	सौ अब्दों (वर्ष) का समाहार
चौमाला	चार मासों का समाहार
दोपहर	दो पहरों का समूह

4. **बहुव्रीहि समास :** जहाँ पहला पद और दूसरा पद मिलाकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं, वहाँ बहुब्रीहि समास होता है। जैसे – नीलकंठ अर्थात, नीले कंठवाला अर्थात् शिव। यहाँ नील और कंठ में से कोई पद प्रधान या गौण नहीं है। बल्कि ये दोनों पद मिलकर तीसरे पद शिव के लिए प्रयुक्त हो रहे हैं।

समस्त पद	**विग्रह**
गजानन	गज जैसे आनन (मुँह) वाला (गणेश)
एकदंत	एक दांतवाला (गणेश)
त्रिनेत्र	तीन नेत्रोंवाला (शिव)
वीणापाणि	जिसकी पाणि में वीणा हो (सरस्वती)
निशाचर	निशा में विचरण करनेवाला (राक्षस)
दशानन	दस मुखोंवाला (रावण)

5. **द्वन्द्व समास :** जिस समस्त पद में दोनों पद समान हों, वहाँ द्वन्द्व समास होता है।

समस्त पद	**विग्रह**
अन्न–जल	अन्न और जल या अन्न तथा जल
अपना–पराया	अपना और पराया या अपना तथा पराया
अमीर–गरीब	अमीर और गरीब या अमीर या गरीब
आटा–दाल	आटा और दाल या आटा तथा दाल
आशा–निराशा	आशा और निराशा या आशा तथा निराशा
नर–नारी	नर और नारी या नर या नारी
पाप–पुण्य	पाप और पुण्य या पाप या पुण्य

6. **अव्ययीभाव समास :** जिसका पहला पद अव्यय हो, या दोनों पद मलिकर अव्यय की तरह व्यवहार करते हों, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसे –

प्रतिदिन	प्रत्येक दिन	हर एक दिन
आजीवन	जीवन भर	

आमरण	मरण तक
बेखटके	बिना खटके के
गाँव–गाँव	प्रत्येक गाँव
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
यथाविधि	विधि के अनुसार

●